

DPN 6618

Title : चचा सफू / CACĀ SAPHŪ

Run. No. 7343

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Saṅgīta*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20.5 x 8

Folios 10

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

नूदे सुन्दर तुलाधर

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : *on the margin* : नन्दितमस्कार ॥ १ ॥

Material : palmleaf / paper / *thyasaphu* /

विश्वसरोरु ॥ २ ॥ मध्यमेरु ॥ ३ ॥ निर्मान्नादि ॥ ४ ॥
गवकु दह ॥ ५ ॥ खट जो गीती ॥ ६ ॥ - - -

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

धुपि चचा न्येत समावेस नुया च्वंगु दु।

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्रीपद्मनृत्येश्वराय ॥ २ ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसम्बन्धाय ॥ तस्य प्रहाण्ड खण्ड ग्रह रवि-
साक्षी भित् - - -

5



5

10

15

20

[illegible][illegible]

विष्णुसंज्ञा २॥

काया ॥ सहजानन्दकायिका ॥ गङ्गा ॥ ॥ निषिद्धांजिनदं
याज्ञादसुद्विग ॥ काया ॥ ॥ नरुतसंशुक्माया ॥ ॥ लाकडा
अ ॥ ॥ तमस्कात्रा ॥ ॥ गगनशून्यविशालकंदालसाथ ॥
विधसत्रावृहदिविविक्ताशमाकावविद्यायितसंसंरुवा ॥ ॥ नसा
मिश्रनमामिवागिधवसचलमूनिहृदयाश्विगोमप्यिकुटागवमना
हयास्यलोजिनहृदया ॥ ॥ पीतनिमनसितवंधेनश्येवांजि

मधुसूत ३॥

नमकुटमनीलयनं ॥ ॥ धर्मवकुसुमाकुलीससत्राभश्यक्षवा
पात्रिपुष्करवकुसुमं ॥ ॥ ॥ सत्रासुवन्तमितवचनताश्रुनयिपत्र
मादेवज्जीनगुनलयन ॥ ॥ ॥ गगनशून्यविशालकंदालसाथ ॥
कनकगोकिरपूवीदेदहंमृद्वीपंश्रमयवरागदायानिउरुवकुन
रुवन्तयंचवर्धयिक्किनव्यापियोय ॥ ॥ ॥ नमयक्वद्विविध
सिजिताविधहेताविधरुगयक्वसत्रातिश्रमद्विद्यानत्रगातिजि

चक्रं रक्षांति सततं च लक्ष्मि सल मदा सख चक्रं हंका नृप श्री ह नृ कना
थग ॥ दहाते कि न विरुक्ति गत्ये दानि सर्व मृग वान यना द नृपी २
पिथादि द गह मि स गत यूज नि कि न रूत दाय नी वि लक्ष्मी ॥ ॥
दर्थ नृपति विम्वरु ल च डाय प्रमृहे नि मि स म नृ वरु द वी २ उ त्तम
स गुरु या य स नृ व द र्ते नि ना ग न मा द्य यु दं ॥ ॥ ॥ गारा ग ध्वरु व वि
ग र्व कृ द ह न य च रूत न स नृ प २ य च मृग व स यं च सा वि युक्ति या ॥ ॥ ॥

॥ तुम्ह दवी वा नि ग या छि रु व न वि ग श वि नं म य य क स म या आ न द ॥
 ॥ वि न वि ल श व स ह ज्ञा आ न द श क य क स ग स ह द या आ न द
 ॥ य क व द य क क र स न य श द वा म स न ग य प दि न ह द या ॥
 ॥ ज्ञा ४ ह ज्ञा र व स ध न क य र श उ म न य ध धा नि वि न मा आ न द
 ॥ ग ग क र छि र व ट ग गि नी द वी छि रु व न य यि नी श वि घ्ना
 न द स द य र वि ना सि नि ॥ ५ ॥ छि न मा मि द वी श्री व ज वा ना हि श मः

॥ संसयश्चक्षुःशुद्धो नयति यः सर्वो सिद्धिं संयदं ॥

श्रीगणेशनिवेदः॥ अथ यानि प्रकृतं नमस्कृतं नमस्कृतं गगनकमलशुभम्
पिशाचं नमस्कृतं विनासितं लाय श्रीश्रीयादविप्रानाविद्धं समस्तविनाश
शान्तसांभोग्यं वात्रहोनिनक्षत्रं स्वर्गावहं शुभं वक्ष्ये यथाशक्नुमः॥

अथ हस्तमार्गकं नमस्कृतं विनाशितं नमस्कृतं मन्त्राय नमः॥ श्रीगणेशाय नमः॥
नमानं दविप्रमासहजं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं
नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं नमस्कृतं

57

0

CM 76

5

10

15

20

ओहिवरुनेगामा॥७

अदशकुवताचउवक्तवदनाडादभानयनाशरुनायिकर्क्षयाशखरुः
सवनाकालिल्लाणित्रिपुत्राययिवदना॥ ॥यागवर्क्षडि॥भीहः
वऊनेगामादवीगिरुवजनाथशयंवाजिनव्यापितयंववर्क्षदहा॥ ५
॥नमासिश्रीपुष्टशचक्षुशहृवृकधीगुक्तव्रीवऊआगिनीगन्धता॥
॥ ॥पूर्वादिगोस्मिन्नरुववनीववर्क्षशदहिनयाकुधाविवासोविद्वध
॥ ॥घमावित्रीविज्ञागिनीदवीशगावर्क्षनिवावऊहंकायसंवऊ॥

मायाजाले॥५१॥

॥ ॥यागदसाव॥मायाजालविम्बसदभसवीयाशमाहमानदर्थछादि
नमायाभाहा॥ ५ ॥उससावजुसायाशयागद्वषमाहछादिप्रभासा॥
॥अनामिखनयनदृटकवृत्तियशुडसमवीविकद्वष्ट्रचपूथदू॥ ॥संसा
नसलावनयडदनागकधवीयाशुखयनमसस्वासत्रवृष॥ ॥अवधू
वडदयंवदुयाययसादाशगवर्क्षनिदशखयायससवकाविवा॥ ॥
॥ ॥यागमवित्रीगंभूजनीवंऊनयनमयुरुभनमायसंहाडशलावह

५२ ॥

वियसंहावदनानासिमयिऊं व ॥ ॥ नडरुवनडा निर्वानतादि ॥
मामहासुहवजं ॥ यातावायिमनतावक ॥ साघवसादयिकरु ॥ ॥
अक्षवूमकुविवरुया नासाविदुताविरु ॥ ॥ साघवसेसदासुहानाक
दिताविरु ॥ ॥ किमयाविनीधुसहावजागितेतावायिमनताव ॥
नानिपंऊनेयवमपरुनातयिपुनानपाड ॥ ॥ किमऊलमाभ्यवद
साहेनास्वहनमिछ ॥ शोतेनासामुल्लवकगतनयनसहावस्वद ॥ ॥

५३ ॥

गगागावलासुगायवमवमानवलावक ॥ नवविग्रहनवेग्राहक ॥ ॥
गमानुनशीतेरुमूपाविष्ट ॥ नवद्युतनभाहन ॥ साघवविजं ॥ ॥ गगा
गद्वघनमाहन ॥ ॥ या ॥ नवयसमुन्यसमानदय्य ॥ ॥ सावतलावक ॥
मिपुनंभऊनिष्टवंगसहय ॥ साविस्वद ॥ ॥ ॥ यनकुयनकुवद्वकिता
काशंनकुनकुवद्वनम ॥ ॥ ॥ लाकामहानितलत्वविवादि
तासिदिनलया ॥ ॥ नसागंधन ॥ दननूपा ॥ नवप्रसनेवाविहविस्

15

इयं वाचिनी ३१२ ॥

॥ यत्तु सत्तु ध्वजमलस्य प्रविमुद्ध श्युद्ध स्वकावज्ज त्वज्जुमं ॥
॥ गगमधुमक ॥ अयं वाच्छा विदु नूवघवाये शस्य नूवना सत्रज्ज गकड
ध्वजी ॥ क ॥ कहरुग वाकि योदक मलमहिम सु नवयूल नूनं सन
कागारहादरुमन आरु नधा विरु विन मख यद्यं ठड वा मशो तोने २
किनया किनि किनि जय नारा ॥ ॥ क प्रहिष र्थ प्रगा व नूड न वासिः
प्रमा नाश्क क्षी त्वद्योग व नम कूट क म ॥ ॥ मित्रं सहिध्व न क मे ॥

10

विषय २

प्रस्तुताश्क खनी क र्थ प्रमा वा न सत्तु सानी ॥ ॥ रुनाये सत्तु वडा
वाछालि वा स श्यो हव द वीष भाद धी ह नूक या या ॥ ॥ गगमधुमक वि
षय श्वेन य व न संभा म्भा लाये वं डा ना ले क म य श्द हा यो के ना वि स म मि स वा ये
मुव ह के ना के नि आ ला स म य म्भा म स य वं ॥ ॥ न म म रु धा त्वं का न व क ह
यज्ज स म्भा ना वि स न यं श्या ये य इ स संभा म्भा स रु व नि ध वा स हं रु द न द म य स न न यं

5

10

15

20